रात्रि क्लास 30-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

यह तो बाप और बच्चे जानते हैं। भगवानुवाच है। मैं तो सदैव रहता हूं शान्तिधाम में। टावर आफ सायलेन्स। और तुम टावर आफ हैपीनेस और टावर आफ अनहैपीनेस। यह बाप बताते हैं। फिर मैं आता ही हूं संगम युग पर। फिर कब टावर आफ सायलेन्स छोड़ता नहीं हूं। सुख में आवेंगे तो दुःख में भी आना पड़े। दुःख में तुम सदैव पुकारते रहते हो। फिर जब ड्रामा प्लेन अनुसार कल्प पूरा होता है तब आता हूं। मैं ड्रामा में बांधयमान हूं। आना ही पड़ता है। तुम बच्चों को टावर आफ अनहैपीनेस से निकाल टावर आफ हैपीनेस में ले जाता हूं। सायलेन्स होम में तो जाना ही है। सतयुग में है हैपीनेस। उनके साथ शान्तिधाम है। यहां है टावर आफ अशान्ति। इसमें अनहैपीनेस है। इन बातों को दुनिया में कोई भी नहीं जानते। तुम ही जानते हो। बच्चे घड़ी2 भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग होम जरूर ले जाऊंगा। यह नालेज तो बहुत सहज है। बेहद का झाड़ है। इनको कहा जाता है कल्प वृक्ष। 5000 वर्ष की आयु वाले वृक्ष। बाप भी कहते हैं मैं कल्प2 के संगम युग पर आता हूं। तुमको नई दुनिया के नायक बनाता हूं। जो मेरे से नहीं मिलते हैं वह नई दुनिया में आते नहीं हैं। शान्तिधाम सभी का घर है। फिर नम्बरवार सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग में आते रहेंगे। अभी भी आते रहते हैं। यह सभी बातें भी जानने की दरकार नहीं। बाप कहते हैं यह है ही पुरानी दुनिया। फिर नई दुनिया में जाना है। और कुछ जानने की दरकार नहीं। इसलिये बाप कहते हैं जास्ती क्या सुनावें। मन्मनाभव। बाप और वरसा। बाकी तो डिटेल है। बाप बेहद का है तो हमारा स्वर्ग की बादशाही का हक है। बेहद का बाप है तो जरूर हम नई दुनिया के मालिक होने चाहिए। क्योंकि बाप समझाते हैं। 5000 वर्ष की बात है। लक्ष्मी का राज्य था। लाखों वर्ष की बात तो याद आ न सके। ख्याल में भी आ न सके। बाप कहते हैं 84 के चक्र को याद करो। बस। अभी तुम बच्चों को चलते फिरते यही रहना है हमको जाना है। जब तक 100% प्यूर बन न जायें तब तक जा न सके। जितना बाप को याद करेंगे उतना ही बैटरी चार्ज होगी। डिसचार्ज होने में कितना समय लगता है? 5000 वर्ष। शुरू से लेकर कला कम होते होते उतरते आते हैं। भोगियों की लाईफ छोटी, योगियों की लाईफ बड़ी होती है। यह बातें जो बाप समझाते हैं कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप कहते हैं अलफ बे बस। और बातों में नहीं जाओ। बेहद का बाप मिला तो वरसा जरूर स्वर्ग का है। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। सात रोज का कोर्स है ही फुल पढ़ाई के लिये। सात रोज में भी सर्विस एबुल बन सकते हैं। बड़ी बात नहीं है। बच्चों को अपनी राजधानी स्थापन करने लिये कितनी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिये बाप कहते हैं इस मेरे अविनाशी ज्ञान का विनाश कब हो न सके। थोड़ा भी सुना बाप को याद करो। बस। यह भी काफी है। पिछाड़ी में तो बहुत ही आवेंगे। भक्ति का राज्य खलास होना है। अभी तो जो रीलिजन को ही नहीं मानते। परन्तु फिर साधु सन्त आदि का कितना साथ देते रहते हैं। तुम कोई भी काम में इन्टरफेयर नहीं करते हो। कुछ साधु सन्तों का हंगामा मेला मलखरा कुछ भी नहीं। यह तो सिर्फ पढ़ाई है। बाप और बच्चों का मेला है। वह मेला समझते हैं बहुतों को मिलना करना। मेले आजकल कितने ढेर लगते हैं। उनसे तो म्युजियम अच्छा है। देहली में बड़े2 मेले होते हैं। उसमें तुम ले सकते हो। इसमें तो आपेंही आते रहेंगे औरों को भी साथ में ले आवेंगे। दिन प्रति दिन जास्ती होता जावेगा। डर जादू आदि की बात निकलती जावेगी। कितना पुराना डर है। यह भगाते हैं। बहन भाई बनाते हैं। भाई बहन तो होना ही पड़े। भाई2 भी होना पड़े। बाप समझाते हैं माला का नम्बरवन दाना बनना है। तो जब ऐसे ब्रह्मा कुमार कुमारियां यहां हैं भाई बहन। दैवीगुणवान बनेंगे तब ही स्कालरशिप पा सकेंगे। कभी स्कालरशिप नहीं है। विश्व का मालिक बनना होता है। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। बाकी क्या चाहिए। अच्छा मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग नाईट और नमस्ते।